श्रेष्ठगीत

1 सुलैमान का श्रेष्ठगीत।

प्रेमिका का अपने प्रेमी के प्रति

2तू मुझ को अपने मुख के चुम्बनों से ढक ले। क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से भी उत्तम है।
3तेरा नाम मूल्यवान इत्र से उत्तम है, और तेरी गंध अद्भुत है। इसलिए कुमारियाँ तुझ से प्रेम करती हैं।
4हे मेरे राजा तू मुझे अपने संग ले ले! और हम कहीं दूर भाग चलें! राजा मुझे अपने कमरे में ले गया।

पुरुष के प्रति यरूशलेम की स्त्रियाँ

हम तुझ में आनन्दित और मगन रहेंगे। हम तेरी बड़ाई करते हैं। क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है। इसलिए कुमारियाँ तुझ से प्रेम करती है।

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

5हे यरुशलेम की पुत्रियों, मैं काली हूँ किन्तु सुन्दर हूँ। मैं तैमान और सलमा के तम्बूओं के जैसे काली हूँ।
6मुझे मत घूर कि मैं कितनी साँवली हूँ। सूरज ने मुझे कितना काला कर दिया है। मेरे भाई मुझ से क्रोधित थे। इसलिए दाख के बगीचों की रखवाली करायी। इसलिए मैं अपना ध्यान नहीं रख सकी।

स्त्री का वचन पुरुष के प्रति

7मैं तुझे अपनी पूरी आत्मा से प्रेम करती हूँ! मेरे प्रिये मुझे बता; तू अपनी भेड़ों को कहाँ चराता है? दोपहर में उन्हें कहाँ बिठाया करता है? मुझे ऐसी एक लड़की के पास नहीं होना जो घूंघट काढ़ती है, जब वह तेरे मित्रों की भेड़ों के पास होती है!

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

8तू निश्चय ही जानती है कि स्त्रियों में तू ही सुन्दर है! जा, पीछे पीछे चली जा, जहाँ भेड़ें और बकरी के बच्चे जाते हैं। निज गड़रियों के तम्बूओं के पास चरा।
9मेरी प्रिये, मेरे लिए तू उस घोड़ी से भी बहुत अधिक उत्तेजक है जो उन घोड़ों के बीच फिरौन के रथ को खींचा करते हैं। वे घोड़े मुख के किनारे से गर्दन तक सुन्दर सुसज्जित हैं।
10-11तेरे लिये हम ने सोने के आभूषण बनाए हैं। जिनमें चाँदी के दाने लगें हैं। तेरे सुन्दर कपोल कितने अलंकृत हैं। तेरी सुन्दर गर्दन मनकों से सजी हैं।

स्त्री का वचन

12मेरे इत्र की सुगन्ध, गद्दी पर बैठे राजा तक फैलती है।
13मेरा प्रियतम रस गन्ध के कुप्पे सा है। वह मेरे वक्षों के बीच सारी रात सोयेगा।
14मेरा प्रिय मेरे लिये मेंहदी के फूलों के गुच्छों जैसा है जो एनगदी के अंगूर के बगीचे में फलता है।

पुरुष का वचन

15मेरी प्रिये, तुम रमणीय हो! ओह, तुम कितनी सुन्दर हो! तेरी आँखे कपोतों की सी सुन्दर हैं।

स्त्री का वचन

16हे मेरे प्रियतम, तू कितना सुन्दर है! हाँ, तू मनमोहक है! हमारी सेज कितनी रमणीय है!
17कड़ियाँ जो हमारे घर को थामें हुए हैं वह देवदारु की हैं। कड़ियाँ जो हमारी छत को थामा हुआ है, सनोवर की लकड़ी का है।

2 मैं शारोन के केसर के पाटल सी हूँ। मैं घाटियों की कुमुदिनी हूँ।

पुरुष का वचन

2हे मेरी प्रिये, अन्य युवतियों के बीच तुम वैसी ही हो मानों काँटों के बीच कुमुदिनी हो!

स्त्री का वचन

3मेरे प्रिय, अन्य युवकों के बीच तुम ऐसे लगते हो जैसे जंगल के पेड़ों में कोई सेब का पेड़!

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

मुझे अपने प्रियतम की छाया में बैठना अच्छा लगता है; उसका फल मुझे खाने में अति मीठा लगता है।
4मेरा प्रिय मुझको मधुशाला में ले आया; मेरा प्रेम उसका संकल्प था।

5मैं प्रेम की रोगी हूँ अत: मुनक्का मुझे खिलाओ और सेबों से मुझे ताजा करो।

6मेरे सिर के नीचे प्रियतम का बाँया हाथ है, और उसका दाँया हाथ मेरा आलिंगन करता है।

7यरूशलेम की कुमारियों, कुरंगों और जंगली हिरणियों को साक्षी मान कर मुझ को वचन दो, प्रेम को मत जगाओ, प्रेम को मत उकसाओ, जब तक मैं तैयार न हो जाऊँ।

स्त्री ने फिर कहा

8मैं अपने प्रियतम की आवाज सुनती हूँ। यह पहाड़ों से उछलती हुई और पहाड़ियों से कूदती हुई आती है।

9मेरा प्रियतम सुन्दर कुरंगअथवा हरिण जैसा है। देखो वह हमारी दीवार के उस पार खड़ा है, वह झंझरी से देखते हुए खिड़कियों को ताक रहा है।

10मेरा प्रियतम बोला और उसने मुझसे कहा, “उठो, मेरी प्रिये, हे मेरी सुन्दरी, आओ कहीं दूर चलें!

11देखो, शीत ऋतु बीत गई है, वर्षा समाप्त हो गई और चली गई है।

12धरती पर फूल खिलें हुए हैं। चिड़ियों के गाने का समय आ गया है! धरती पर कपोत की ध्वनि गुंजित है।

13अंजीर के पेड़ों पर अंजीर पकने लगे हैं। अंगूर की बेलें फूल रही हैं और उनकी भीनी गन्ध फैल रही है। मेरे प्रिय उठ, हे मेरे सुन्दर, आओ कहीं दूर चलें!”

14हे मेरे कपोत, जो ऊँचे चट्टानों के गुफाओं में और पहाड़ों में छिपे हो, मुझे अपना मुख दिखा, मुझे अपनी ध्वनि सुना क्योंकि तेरी ध्वनि मधुर और तेरा मुख सुन्दर है!”

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

15जो छोटी लोमड़ियाँ दाख के बगीचों को बिगाड़ती हैं, हमारे लिये उनको पकड़ो! हमारे अंगूर के बगीचे अब फूल रहे हैं।

16मेरा प्रिय मेरा है और मैं उसकी हूँ! मेरा प्रिय अपनी भेड़ बकरियों को कुमुदिनियों के बीच चराता है,

17जब तक दिन नहीं ढलता है और छाया लम्बी नहीं हो जाती है। लौट आ, मेरे प्रिय, कुरंग सा बन अथवा हरिण सा बेतेर के पहाड़ों पर!

स्त्री का वचन

3 हर रात अपनी सेज पर मैं अपने मन में उसे ढूँढती हूँ। जो पुरुष मेरा प्रिय है, मैंने उसे ढूँढा है, किन्तु मैंने उसे नहीं पाया!

2अब मैं उठूँगी! मैं नगर के चारों गलियों, बाजारों में जाऊँगी। मैं उसे ढूढूँगी जिसको मैं प्रेम करती हूँ। मैंने वह पुरुष ढूँढा पर वह मुझे नहीं मिला!

3मुझे नगर के पहरेदार मिले। मैंने उनसे पूछा, “क्या तूने उस पुरुष को देखा जिसे मैं प्यार करती हूँ?”

4पहरेदारों से मैं अभी थोड़ी ही दूर गई कि मुझको मेरा प्रियतम मिल गया! मैंने उसे पकड़ लिया और तब तक जाने नहीं दिया जब तक मैं उसे अपनी माता के घर में न ले आई अर्थात् उस स्त्री के कक्ष में जिसने मुझे गर्भ में धरा था।

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

5यरूशलेम की कुमारियों, कुरंगों और जंगली हिरणियों को साक्षी मान कर मुझको वचन दो, प्रेम को मत जगाओ, प्रेम को मत उकसाओ, जब तक मैं तैयार न हो जाऊँ।

वह और उसकी दुल्हिन

6यह कुमारी कौन है जो मरुभूमि से लोगों की इस बड़ी भीड़ के साथ आ रही है? धूल उनके पीछे से यूँ उठ रही है मानों कोई धुएँ का बादल हो। जो धूआँ जलते हुए गन्ध रस, धूप और अन्य गंध मसाले से निकल रही हो।

7सुलैमान की पालकी को देखो! उसकी यात्रा की पालकी को साठ सैनिक घेरे हुए हैं। इस्राएल के शक्तिशाली सैनिक!

8वे सभी सैनिक तलवारों से सुसज्जित हैं जो युद्ध में निपुण हैं; हर व्यक्ति की बगल में तलवार लटकती है, जो रात के भयानक खतरों के लिये तत्पर हैं!

9राजा सुलैमान ने यात्रा हेतु अपने लिये एक पालकी बनवाई है, जिसे लबानोन की लकड़ी से बनाया गया है।

10उसने यात्रा कीपालकी के बल्लों को चाँदी से बनाया और उसकी टेक सोने से बनायी गई। पालकी की गद्दी को उसने बैंगनी वस्त्र से ढँका और यह यरूशलेम की पुत्रियों के द्वारा प्रेम से बुना गया था।

11सिय्योन के पुत्रियों, बाहर आ कर राजा सुलैमान को उसके मुकुट के साथ देखो जो उसको उसकी माता ने उस दिन पहनाया था जब वह ब्याहा गया था, उस दिन वह बहुत प्रसन्न था!

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

4 मेरी प्रिये, तुम अति सुन्दर हो! तुम सुन्दर हो! घूँघट की ओट में तेरी आँखें कपोत की आँखों जैसी सरल हैं। तेरे केश लम्बे और लहराते हुए हैं जैसे बकरी के बच्चे गिलाद के पहाड़ के ऊपर से नाचते उतरते हों।

2तेरे दाँत उन भेड़ों जैसे सफेद हैं जो अभी अभी नहाकर के निकली हों। वे सभी जुड़वा बच्चों को जन्म दिया करती हैं; और उनके बच्चे नहीं मरे हैं।

3तेरा अधर लाल रेशम के धागे सा है। तेरा मुख
सुन्दर है। अनार के दो फाँकों की जैसी तेरे घूंघट के
नीचे तेरी कनपटियाँ हैं।
4तेरी गर्दन लम्बी और पतली है जो खास सजावट के
लिये दाऊद की मीनार जैसी की गई। उस की दीवारों
पर हजारों छोटी छोटी ढाल लटकती हैं। हर एक ढाल
किसी वीर योद्धा का है।
5तेरे दो स्तन जुड़वा बाल मृग जैसे हैं, जैसे जुड़वा
कुरंग कुमुदों के बीच चरता हो।
6मैं गंधरस के पहाड़ पर जाऊँगा और उस पहाड़ी पर
जो लोबान की है, जब दिन अपनी अन्तिम साँस लेता है
और उसकी छाया बहुत लम्बी हो कर छिप जाती है।
7मेरी प्रिये, तू पूरी की पूरी सुन्दर हो। तुझ पर कहीं
कोई धब्बा नहीं है!
8ओ मेरी दुल्हिन, लबानोन से आ, मेरे साथ आजा।
लबानोन से मेरे साथ आजा, अमाना की चोटी से,
शनीर की ऊँचाई से, सिंह की गुफाओं से और चीतों के
पहाड़ों से आ!
9हे मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन, तुम मुझे उत्तेजित
करती हो। आँखों की चितवन मात्र से और अपने
कंठहार के बस एक ही रत्न से तुमने मेरा मन मोह
लिया है।
10मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन, तेरा प्रेम कितना
सुन्दर है! तेरा प्रेम दाखमधु से अधिक उत्तम है; तेरी इत्र
की सुगन्ध किसी भी सुगन्ध से उत्तमहै!
11मेरी दुल्हिन, तेरे अधरों से मधु टपकता है। तेरी
वाणी में शहद और दूध की खुशबू है। तेरे वस्त्रों की
गंध इत्र जैसी मोहक है।
12मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन, तुम ऐसी हो जैसे
किसी उपवन पर ताला लगा हो। तुम ऐसी हो जैसे कोई
रोका हुआ सोता हो या बन्द किया झरना हो।
13तेरे अंग उस उपवन जैसे हैं जो अनार और मोहक
फलों से भरा हो, जिसमें मेहंदी और जटामासी के फूल
भरे हों;
14जिसमें जटामासी का, केसर, अगर और दालचीनी
का इत्र भरा हो। जिसमें देवदार के गंधरस और अगर
व उत्तम सुगन्धित द्रव्य साथ में भरे हों।
15तू उपवन का सोता है जिस का स्वच्छ जल नीचे
लबानोन की पहाड़ी से बहता है। स्त्री का वचन
16जागो, हे उत्तर की हवा! आ, तू दक्षिण पवन! मेरे
उपवन पर बह। जिससे इस की मीठी, गन्ध चारों ओर
फैल जाये। मेरा प्रिय मेरे उपवन में प्रवेश करे और वह
इसका मधुर फल खाये।

पुरुष का वचन

5 मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन, मैंने अपने उपवन में
अपनी सुगंध सामग्री के साथ प्रवेश किया। मैंने
अपना रसगंध एकत्र किया है। मैं अपना मधु छत्ता
समेत खा चुका। मैं अपना दाखमधु और अपना दूध पी
चुका।

स्त्रियों का वचन प्रेमियों के प्रति

हे मित्रों, खाओ, हाँ प्रेमियों, पियो! प्रेम के दाखमधु से
मस्त हो जाओ!

स्त्री का वचन

2मैं सोती हूँ किन्तु मेरा हृदय जागता है। मैं अपने
हृदय-धन को द्वार पर दस्तक देते हुए सुनती हूँ। “मेरे
लिये द्वार खोलो मेरी संगिनी, ओ मेरी प्रिये! मेरी कबूतरी,
ओ मेरी निर्मल! मेरे सिर पर ओस पड़ी है मेरे केश
रात की नमी से भीगें हैं।
3मैंने निज वस्त्र उतार दिया है। मैं इसे फिर से नहीं
पहनना चाहती हूँ। मैं अपने पाँव धो चुकी हूँ, फिर से मैं
इसे मैला नहीं करना चाहती हूँ।”
4मेरे प्रियतम ने कपाट की झिरी में हाथ डाल दिया,
मुझे उसके लिये खेद है।
5मैं अपने प्रियतम के लिये द्वार खोलने को उठ जाती
हूँ। रसगंध मेरे हाथों से और सुगंधित रस गंध मेरी
उंगलियों से ताले के हत्थे पर टपकता है।
6अपने प्रियतम के लिये मैंने द्वार खोल दिया, किन्तु
मेरा प्रियतम तब तक जा चुका था! जब वह चला गया
तो जैसे मेरा प्राण निकल गया। मैं उसे ढूँढती फिरी
किन्तु मैंने उसे नहीं पाया; मैं उसे पुकारती फिरी किन्तु
उसने मुझे उत्तर नहीं दिया!
7नगर के पहरुओं ने मुझे पाया। उन्होंने मुझे मारा
और मुझे क्षति पहुँचायी। नगर के परकोटे के पहरुओं
ने मुझसे मेरा दुपट्टा छीन लिया।
8यरुशलेम की पुत्रियों, मेरी तुमसे विनती है कि यदि
तुम मेरे प्रियतम को पा जाओ तो उसको बता देना कि
मैं उसके प्रेम की भूखी हूँ।

यरुशलेम की पुत्रियों का उसको उत्तर

9क्या तेरा प्रिय, औरों के प्रियों से उत्तम है? स्त्रियों में
तू सुन्दरतम स्त्री है। क्या तेरा प्रिय, औरों से उत्तम है?
क्य इसलिये तू हम से ऐसा वचन चाहती है?

यरुशलेम की पुत्रियों को उसका उत्तर

10मेरा प्रियतम गौरवर्ण और तेजस्वी है। वह दसियों
हजार पुरुषों में सर्वोत्तम है।
11उसका माथा शुद्ध सोने सा, उसके घुँघराले केश
कौवे से काले अति सुन्दर हैं।
12ऐसी उसकी आँखे है जैसे जल धार के किनारे
कबूतर बैठे हों। उसकी आँखें दूध में नहाये कबूतर
जैसी हैं। उसकी आँखें ऐसी हैं जैसे रत्न जड़े हों।

13गाल उसके मसालों की क्यारी जैसे लगते हैं, जैसे कोई फूलों की क्यारी जिससे सुगंध फैल रही हो। उसके होंठ कुमुद से हैं जिनसे रसगंध टपका करता है।

14उसकी भुजायें सोने की छड़ जैसी है जिनमें रत्न जड़े हों। उसकी देह ऐसी है जिसमें नीलम जड़े हों।

15उसकी जाँघे संगमरमर के खम्बों जैसी है जिनको उत्तम स्वर्ण पर बैठाया गया हो। उसका ऊँचा कद लबानोन के देवदार जैसा है जो देवदार वृक्षों में उत्तम है!

16हाँ, यरुशलेम की पुत्रियों, मेरा प्रियतम बहुत ही अधिक कामनीय है, सबसे मधुरतम उसका मुख है। ऐसा है मेरा प्रियतम, मेरा मित्र।

यरुशलेम की पुत्रियों का उससे कथन

6 स्त्रियों में सुन्दरतम स्त्री, बता तेरा प्रियतम कहाँ चला गया? किस राह से तेरा प्रियतम चला गया है? हमें बता ताकि हम तेरे साथ उसको ढूँढ सके।

यरुशलेम की पुत्रियों को उसका उत्तर

2मेरा प्रिय अपने उपवन में चला गया, सुगंधित क्यारियों में, उपवन में अपनी भेड़ चराने को और कुमुदिनियाँ एकत्र करने को।

3मैं हूँ अपने प्रियतम की और वह मेरा प्रियतम है। वह कुमुदिनियों के बीच चराया करता है।

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

4मेरी प्रिय, तू तिर्सा सी सुन्दर है, तू यरुशलेम सी मनोहर है, तू इतनी अद्भुत है जैसे कोई दिवारों से घिरा नगर हो।

5मेरे ऊपर से तू आँखें हटा ले! तेरे नयन मुझको उत्तेजित करते हैं! तेरे केश लम्बे हैं और वे ऐसे लहराते हैं जैसे गिलाद की पहाड़ी से बकरियों का झुण्ड उछलता हुआ उतरता आता हो।

6तेरे दाँत ऐसे सफेद हैं जैस मेढ़े जो अभी अभी नहा कर निकली हों। वे सभी जुड़वा बच्चों को जन्म दिया करती हैं और उनमें से किसी का भी बच्चा नहीं मराहै।

7घूँघट के नीचे तेरी कनपटियाँ ऐसी हैं जैसे अनार की दो फाँके हों।

8वहाँ साठ रानियाँ, अस्सी सेविकायें और नयी असंख्य कुमारियाँहैं।

9किन्तु मेरी कबूतरी, मेरी निर्मल, उनमें एक मात्रहै। जिस माँ ने उसे जन्म दिया वह उस माँ की प्रिय है। कुमारियों ने उसे देखा और उसे सराहा। हाँ, रानियों और सेविकाओं ने भी उसको देखकर उसकी प्रशंसा की थी।

स्त्रियों द्वारा उसकी प्रशंसा

10वह कुमारियाँ कौन है? वह भोर सी चमकती है। वह चाँद सी सुन्दर है, वह इतनी भव्य है जितना सूर्य, वह ऐसी अद्भुत है जैसे आकाश में सेना।

स्त्री का वचन

11मैं गिरीदार पेड़ों के बगीचे में घाटी की बहार को देखने को उतर गयी, यह देखने कि अंगूर की बेले कितनी बड़ी हैं और अनार की कलियाँ खिली हैं कि नहीं।

12इससे पहले कि मैं यह जान पाती, मेरे मन ने मुझको राजा के व्यक्तियों के रथ में पहुँचा दिया।

यरुशलेम की पुत्रियों को उसको बुलावा

13वापस आ, वापस आ, ओ शुलेम्मिन! वापस आ, वापस आ, ताकि हम तुझे देख सके। क्यों ऐसे शुलेम्मिन को घूरती हो जैसे वह महनैम के नृत्य की नर्तकी हो?

पुरुष द्वारा स्त्री सौन्दर्य का वर्णन

7 हे राजपुत्र की पुत्री, सचमुच तेरे पैर इन जूतियों के भीतर सुन्दर हैं। तेरी जंघाएँ ऐसी गोल हैं जैसे किसी कलाकार के ढाले हुए आभूषण हों।

2तेरी नाभि ऐसी गोल है जैसे कोई कटोरा, इसमें तू दाखमधु भर जाने दे। तेरा पेट ऐसा है जैसे गेहूँ की ढेरी जिसकी सीमाएं घिरी हों कुमुदिनी की पंक्तियों से।

3तेरे उरोज ऐसे हैं जैसे किसी जवान कुरंगी के दो जुड़वा हिरण हो।

4तेरी गर्दन ऐसी है जैसे किसी हाथी दाँत की मीनार हो। तेरे नयन ऐसे हैं जैसे हेशबोन के वे कुण्ड जो बत्रब्बीम के फाटक के पास है। तेरी नाक ऐसी लम्बी है जैसे लबानोन की मीनार जो दमिश्क की ओर मुख किये है।

5तेरा सिर ऐसा है जैसे कर्मेल का पर्वत, और तेरे सिर के बाल रेशम के जैसे हैं। तेरे लम्बे सुन्दर केश किसी राजा तक को वशीभूत कर लेते हैं!

6तू कितनी सुन्दर और मनमोहक है, ओ मेरी प्रिय! तू मुझे कितना आनन्द देती है!

7तू खजूर के पेड़ सी लम्बी है। तेरे उरोज ऐसे हैं जैसे खजूर के गुच्छे।

8मैं खजूर के पेड़ पर चढ़ूँगा, मैं इसकी शाखाओं को पकड़ूँगा, तू अपने उरोजों को अंगूर के गुच्छों सा बनने दे। तेरी श्वास की गंध सेब की सुवास सी है।

9तेरा मुख उत्तम दाखमधु सा हो, जो धीरे से मेरे प्रणय के लिये नीचे उतरती हो, जो धीरे से निद्रा में अलसित लोगों के होंठो तक बहती हो।

स्त्री के वचन पुरुष के प्रति

10मैं अपने प्रियतम की हूँ और वह मुझे चाहताहै।
11आ, मेरे प्रियतम, आ! हम खेतों में निकल चलें,
हम गाँवों में रात बिताये।
12हम बहुत शीघ्र उठें और अंगूर के बागों में निकल
जायें। आ, हम वहाँ देखें क्या अंगूर की बेलों पर कलियाँ
खिल रही हैं। आ, हम देखें क्या बहारें खिल गयी हैं
और क्या अनार की कलियाँ चटक रही हैं। वहीं पर मैं
अपना प्रेम तुझे अर्पण करुँगी।
13प्रणय के वृक्ष निज मधुर सुगंध दिया करते हैं, और
हमारे द्वारों पर सभी सुन्दर फूल, वर्तमान, नये और
पुराने–मैंने तेरे हेतु, सब बचा रखें हैं, मेरी प्रिय!
8 काश, तुम मेरे शिशु भाई होते, मेरी माता की
छाती का दूध पीते हुए! यदि मैं तुझसे वहीं बाहर
मिल जाती तो तुम्हारा चुम्बन मैं ले लेती, और कोई
व्यक्ति मेरी निन्दा नहीं कर पाता! 2मैं तुम्हारी अगुवाई
करती और तुम्हें मैं अपनी माँ के भवन में ले आती,
उस माता के कक्ष में जिसने मुझे शिक्षा दी। मैं तुम्हें
अपने अनार की सुगंधित दाखमधु देती, उसका रस
तुम्हें पीने को देती।

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

3मेरे सिर के नीचे मेरे प्रियतम का बाँया हाथ है और
उसका दाँया हाथ मेरा आलिंगन करताहै।
4यरुशलेम की कुमारियों, मुझ को वचन दो, प्रेम को
मत जगाओ, प्रेम को मत उकसाओ, जब तक मैं तैयार
न हो जाऊँ।

यरुशलेम की पुत्रियों का वचन

5कौन है यह स्त्री अपने प्रियतम पर झुकी हुई जो
मरुभूमि से आ रही है?

स्त्री का वचन पुरुष के प्रति

मैंने तुम्हें सेब के पेड़ तले जगाया था, जहाँ तेरी माता
ने तुझे गर्भ में धरा और यही वह स्थान था जहाँ तेरा
जन्म हुआ।
6अपने हृदय पर तू मुद्रा सा धर। जैसी मुद्रा तेरी बाँह
पर है। क्योंकि प्रेम भी उतना ही सबल है जितनी मृत्यु
सबल है। भावना इतनी तीव्र है जितनी कब्र होती है।
इसकी धदक धधकती हुई लपटों सी होती है!
7प्रेम की आग को जल नहीं बुझा सकता। प्रेम को
बाढ़ बहा नहीं सकती। यदि कोई व्यक्ति प्रेम को घर का
सब दे डाले तो भी उसकी कोई नहीं निन्दा करेगा!

उसके भाईयों का वचन

8 हमारी एक छोटी बहन है, जिसके उरोज अभी फूटे
नहीं। हमको क्या करना चाहिए जिस दिन उसकी सगाई
हो? 9यदि वह नगर का परकोटा हो तो हम उसको
चाँदी की सजावट से मढ़ देंगे। यदि वह नगर हो तो हम
उसको मूल्यवान देवदारु काठ से जड़ देंगे।

उसका अपने भाईयों को उत्तर

10मैं परकोट हूँ और मेरे उरोज गुम्बद जैसे हैं। सो मैं
उसके लिये शांति का दाता हूँ!

पुरुष का वचन

11बाल्हामोन में सुलैमान का अंगूर का उपवनथा।
उसने अपने बाग को रखवाली के लिए दे दिया। हर
रखवाला उसके फलों के बदले में चाँदी के एक हजार
शेकेल लाता था।
12किन्तु सुलैमान, मेरा अपना अंगूर का बाग मेरे
लिये है। हे सुलैमान, मेरे चाँदी के एक हजार शेकेल
सब तू ही रख ले, और ये दो सौ शेकेल उन लोगों के
लिये हैं जो खेतों में फलों की रखवाली करते हैं!

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

13तू जो बागों में रहती है, तेरी ध्वनि मित्र जन सुन
रहे हैं। तू मुझे भी उसको सुनने दे!

स्त्री का वचन पुरुष के प्रति

14ओ मेरे प्रियतम, तू अब जल्दी कर। सुगंधित द्रव्यों
के पहाड़ों पर तू अब चिकारे या युवा मृग सा बन जा!